(दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला)

व्यक्तित्व विकास ओर चरित्र निर्माण

दिनांक 15–12–2018 को अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में प्राचार्य डॉ. कृष्णकान्त गुप्ता जी के निर्देशन में हरियाणा उच्चतर शिक्षा निदेशक के सौजन्य से दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन व सरस्वती वंदना से किया गया। "व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण" विषय पर कार्यशाला कराने का उद्देश्य आधुनिक समय में युवा पीढ़ी को जागृत करना है। भारतीय परम्परा का अनुकरण करते हुए अतिथियों का आदर–सत्कार पौधा भेंट कर किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. कृष्णकान्त गुप्ता जी ने कार्यशाला के आरम्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आधुनिक सन्दर्भ में इस तरह के कार्यक्रम की बड़ी आवश्यकता है और अग्रवाल विद्या प्रचारिणी सभा ऐसे कार्यक्रम कराने में तत्पर हैं और आगे भी रहेगी। अपने व्यक्तव्य के अन्त में मन, वचन और कर्म से एक जैसा बनने का आग्रह किया, साथ ही ऐसा आश्वासन दिया कि निश्चित ही दो दिवसीय कार्यशाला से आप सभी के सोच–विचार में परिवर्तन होगा। तदनन्तर कार्यशाला संयोजिका श्रीमती किरण आनन्द ने संक्षेप में कार्यशाला का सारांश प्रस्तुत किया। बीज वक्ता के रूप में डॉ. मनोहर भण्डारी (सहायक प्राध्यापक, फिजियोलॉजी, इन्दौर) से पधारे। उन्होंने अपने व्यक्तव्य में व्यक्तित्व विकास के लिए पंचकोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय) को आधार बताया। व्यक्तव्य के अन्त में निम्न दो पंक्तियें के साथ मुख्य संदेश श्रोतागणों तक पहुँचाया –

फूलों से नित हंसना सीखो ।

हंसते हंसते कट जाए रास्ते ॥

इस अवसर पर महाविद्यालय प्रवेश द्वार (College Portal), त्रैमासिक पत्रिका (ACB), संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ. पूजा सैनी की पुस्तक (संस्कृत साहित्य और भारतीय संस्कृति) का अनावरण किया गया ।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. आर.के. मित्तल (कुलपति बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी) पधारे । उन्होंने अपने व्यक्तव्य में कहा कि शिक्षण संस्थान ही ऐसा स्थल है जहाँ नैतिक गुण, संस्कार और मानवीय मूल्य आदि गुण प्रदान किये जाते हैं । उन्होंने आग्रह किया कि युवा पीढ़ी को विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से इन गुणों का ज्ञान करना होगा ।

प्रथम सत्र में बहन बी.के. अनुसूया जी (ब्रह्मकुमारी) ने योग द्वारा आत्मा से परमात्मा का मिलन एवं व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण के लिए भारतीय संस्कृति को मूल आधार बताया साथ ही पाश्चात्य संस्कृति को त्यागने का आग्रह किया ।

द्वितीय सत्र में डॉ. अर्चना भाटिया (सह–प्रवक्ता, डी.ए.वी. महाविद्यालय फरीदाबाद) चरित्र निर्माण के लिए अनेक महापुरूष के व्यक्तित्व को उजागर करते हुए महापुरुषों को पथ प्रदर्शक बनाने का अग्रह किया ।

तृतीय सत्र में अनेक प्रेरणात्मक चलचित्र के माध्यम से चरित्र निर्माण का संदेश दिया ।